लागत बढ़ने से शुगर फर्मों की मिठास फीकी

[सूरज साउकर *ईटीआईजी*]

कम कीमत और ऊंची लागत का दबाव झेल रही शुगर मिलों की मुश्किल आने वाले दिनों में बढ़ सकती हैं। सुप्रीम कोर्ट ने हाल में उत्तर प्रदेश सरकार के उस फैसले पर मुहर लगी दी, जिसमें उसने किसानों के लिए स्पेशल एडवायजरी प्राइस (एसएपी) दिलाने की बात कही है। राज्य की चीनी मिलों का कहना है कि इस फैसले उन पर दोतरफा मार पड़ेगी।

सरप्लस चीनी उत्पादन होने और अधिकतम निर्यात सीमा तय होने से चीनी का दाम पहले से ही कम रहने का अनुमान है। उसके बाद बढ़े एसएपी से उन पर लागत का बोझ और बढ़ जाएगा।

सुप्रीम कोर्ट के हालिया निर्देश के बाद उत्तर प्रदेश में गन्ने का एसएपी बढ़कर 240 रुपए क्विंटल हो जाएगा जो एक साल पहले से 20 फीसदी ज्यादा है। मान लिया कि गन्ने से 10 फीसदी चीनी मिलती है और उसका प्रोसेसिंग खर्च 3-4 रुपए किलोग्राम होता है तो चीनी की कुल लागत 28 रुपए किलोग्राम हो जाएगी।

सेक्टर वॉच

पिछले साल अक्टूबर से इस साल सितंबर तक देश में कुल 2.6 करोड़ टन चीनी का उत्पादन होने और चीनी की खपत 2.2 करोड़ टन रहने का अनुमान है। इसको देखते हुए इस साल चीनी की कीमतों में बढ़ोतरी होने के आसार नहीं हैं। सरकार ने 10 लाख टन से ज्यादा चीनी का निर्यात करने की अनुमति दी है जो इंडस्ट्री के लिए राहत की बात है। लेकिन सही समय पर निर्यात कोटा बढ़ाने से कीमत के मोर्चे पर चीनी कंपनियों को फायदा मिलेगा।

लंदन इंटरनेशनल फाइनेंशियल फ्यूचर्स और ऑप्शन्स एक्सचेंज पर पक्की चीनी यानी व्हाइट शुगर का वायदा भाव (ग्लोबल बेंचमार्क) फिलहाल 32 रुपए किलो चल रहा है। चीनी के कम दाम का असर कंपनियों के शेयरों पर पड़ रहा है। बेंचमार्क सेंसेक्स की तुलना में पिछले छह महीने में ईटी शुगर इंडेक्स करीब 50 फीसदी गिरा है।

उद्योग में अनिश्चितता और कमजोर आउटलुक से निवेशक इस कंपनियों के शेयरों से दूर हो चले हैं। चीनी के अलावा को-जेनरेशन यूनिट और एथनॉल से मुनाफा कमाने वाली कंपनियों का प्रदर्शन इस साल बेहतर रह सकता है। बजाज हिन्दुस्तान और बलरामपुर चीनी मिल का प्रदर्शन बढ़िया रह सकता है। इन दोनों कंपनियों को चीनी के अलावा को-जेनरेशन यूनिट और एथनॉल के उत्पादन से अच्छी कमाई होती है, जो कंपनी की कुल आमदनी का एक तिहाई है।

लागत में और बढ़ोतरी

यूपी के किसानों को स्पेशल एडवायजरी प्राइस (एसएपी) देने के सरकार के निर्देश से चीनी मिलों की लागत और बढ़ जाएगी जो पहले से कीमत बढ़ाने की मांग कर रहे हैं

सेक्टर से अलग हुए निवेशक

चीनी के कम दाम का असर कंपनियों के शेयरों पर पड़ रहा है। बेंचमार्क सेंसेक्स की तुलना में पिछले छह महीने में ईटी शुगर इंडेक्स करीब 50 फीसदी गिरा है। अनिश्चितता और कमजोर आउटलुक से निवेशक सेक्टर से दूर चले गए हैं